

## CD-61 १. अंधियारा कोटि युगका

अंधियारा कोटि युगका, पल साठ में रोशन करो,  
ज्ञानाग्नि प्रकट ज्ञानकी, पापों को भस्मीभूत करो ।

तमसो मा ज्योतिर्गमय, मुहूर्त में ही समयसार,  
टंकोत्कीर्ण ज्ञान अभेदसे, प्रत्यक्षहो साक्षात्कार ।

तैतीस कोटि देवी-देवता, शांति कळश बरसाईअे,  
सामायिक शुद्ध आत्मकी, “ज्ञानी” अपूर्व लाईअे ।

वाणी ‘दादा भगवान’ की, तीर्थकरा ॐ प्रतिध्वनि,  
निश्चल विधि सु-चरण की, स्वातम् सिद्धि तारिणी ।

दावानल की आग में, ब्रह्माण्डे ज्वाला अन्त-दाह,  
पाताली करूणामृत झरा, बरखा अमी-वृष्टि करें ।

अमृतधारा प्रेमांजनी, जलते जीवों को शीत कर,  
चरम चौबीशी सामूहिक, ‘जय सच्चिदानंद’ “ज्ञानी” ‘वे’ ।

जय सच्चिदानंद

